REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 10 | JULY - 2025

"भगवान राम का वनगमन पथ : अयोध्या से चित्रकूट, दंडकारण्य और पंचवटी तक का भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन"

डॉ. रमाकांत शर्मा
शोधार्थी भूगोल
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

भगवान श्रीराम का वनगमन भारतीय इतिहास, धर्म और संस्कृति की चेतना का ऐसा अध्याय है, जो भारतीय मानस में आदर्श, त्याग, मर्यादा और धर्म के प्रतीक के रूप में स्थापित है। राम का वनगमन न केवल एक धार्मिक यात्रा है, बल्कि यह भारत की भौगोलिक विविधता, सांस्कृतिक एकता और सामाजिक समरसता को भी प्रकट करता है। अयोध्या से चित्रकूट, फिर दंडकारण्य होते हुए पंचवटी तक फैला यह मार्ग अनेक धार्मिक स्थलों, जनश्रुतियों और ऐतिहासिक साक्ष्यों से समृद्ध है।

मुख्य शब्द – भगवान श्रीराम, वनगमन, भारतीय इतिहास, धर्म एवं संस्कृति।

प्रस्तावना –

भारतवर्ष की सांस्कृतिक चेतना में यदि कोई चरित्र सर्वाधिक गहराई से समाहित है, तो वह हैं, भगवान श्रीराम। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम केवल एक धार्मिक या पौराणिक पात्र नहीं, अपितु भारतीय समाज की नैतिकता, नीति, समरसता, अनुशासन और आदर्श जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। राम का जीवन उनके बाल्यकाल से लेकर वनवास, रावण–वध और राज्याभिषेक तक विविध घटनाओं का समुच्चय है, किंतु उनके वनगमन की घटना विशेष रूप से भारतीय जनमानस में श्रद्धा और संवेदना का विषय रही है।

वनगमन, केवल एक राजसी त्याग नहीं था, यह एक सामाजिक आंदोलन, सांस्कृतिक यात्रा और राष्ट्रीय चेतना का संवाहक बन गया। अयोध्या से वन की ओर यह प्रस्थान त्याग, मर्यादा और कर्तव्य की पराकाष्ठा थी, जो आज भी एक जीवंत आदर्श प्रस्तुत करता है। श्रीराम का यह पथ अयोध्या से प्रारंभ होकर श्रृंगवेरपुर, प्रयागराज, चित्रकूट, दंडकारण्य होते हुए पंचवटी और आगे लंका तक जाता है। यह मार्ग न केवल पौराणिक महत्व रखता है, बल्कि भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधताओं से परिपूर्ण भारत की एकता को भी दर्शाता है। भारत की वर्तमान भौगोलिक और राजनीतिक संरचना में भी इस वनगमन मार्ग की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, झारखंड, ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु जैसे अनेक राज्य इस पथ से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। हर स्थान पर श्रीराम के वनवास से संबंधित कोई–न–कोई जनश्रुति, मंदिर, नदी, पर्वत या आश्रम आज भी विद्यमान हैं, जो उस गौरवपूर्ण यात्रा की स्मृति को संजोए हुए हैं ।ाप

रामचरितमानस के अनुसार, जब राजा दशरथ ने श्रीराम के राज्याभिषेक की घोषणा की, तभी कैकेयी ने अपने दो वरदानों का स्मरण कराया – भरत के लिए राज्य और राम के लिए 14 वर्षों का वनवास। यह निर्णय श्रीराम ने न केवल बिना विरोध स्वीकार किया, बल्कि खुशी–खुशी अयोध्या छोड़कर वन की ओर प्रस्थान किया। यह घटना हमें सिखाती है कि कर्तव्य और वचन की रक्षा व्यक्ति को कितने बड़े त्याग के लिए प्रेरित कर सकती है। वनगमन के इस मार्ग में श्रीराम के साथ सीता और लक्ष्मण भी थे, जो स्त्री–पुरुष समानता और परिवार के साथ कर्तव्य–पालन के आदर्श को भी दर्शाता है। इस यात्रा में उन्होंने न केवल प्राकृतिक कठिनाइयों का सामना किया, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय संवेदनाओं को भी छुआ।

राम का यह वनगमन पथ भारत की "एकता में विविधता" की भावना का मूर्त रूप है। इस यात्रा के दौरान वे विभिन्न जातियों, समुदायों और सभ्यताओं से मिले। निषादराज गुह जैसे निषादराज, वनवासी शबरी, ऋषि–मुनियों, राक्षसों, और बंदरों जैसे विविध सामाजिक समूहों से उनका संवाद यह दर्शाता है कि राम सभी के आराध्य हैं, वे ब्राह्मण, क्षत्रिय या राजा नहीं, बल्कि जन–जन के देवता हैं। चित्रकूट में भरत मिलन, दंडकारण्य में तपस्वियों की रक्षा, पंचवटी में खर–दूषण वध, यह सब इस बात के प्रतीक हैं कि राम का वनगमन धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि धर्म स्थापना का प्रयास था, जो आज के संदर्भ में सामाजिक न्याय, समानता और बंधुत्व के विचार से जुड़ा हुआ है।

आज यह वनगमन पथ धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ अध्यात्मिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक अध्ययन का भी केंद्र बन रहा है। भारत सरकार और कई राज्य सरकारें मिलकर "राम वनगमन पथ" को पर्यटन मार्ग के रूप में विकसित कर रही हैं। इसमें अयोध्या, चित्रकूट, सतना, दंतेवाड़ा, नासिक आदि प्रमुख पड़ाव शामिल हैं। इस पहल से न केवल धार्मिक स्थलों का संरक्षण संभव होगा, बल्कि इससे जुड़े जनजातीय और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास, रोजगार और सांस्कृतिक संरक्षण को भी बल मिलेगा। वनगमन पथ को भौगोलिक अध्ययन की दृष्टि से देखें तो यह मार्ग विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों, जलवायु, वन संरचना और मानव–जनजीवन का दर्पण है। उत्तर भारत की मैदानी भूमि से लेकर मध्य भारत के पठारी क्षेत्रों और दक्षिण भारत के घने वनों तक, यह यात्रा प्रकृति के विविध रूपों का जीवंत अनुभव है। यह मार्ग अध्यात्मिकता के साथ–साथ पारिस्थितिकी, समाजशास्त्र और भूगोल का भी संगम है।

जब हम आज के भारत को देखते हैं, जहाँ समाज में भौगोलिक, भाषाई, सांस्कृतिक और धार्मिक विविधताएँ विद्यमान हैं, तब राम का वनगमन हमें एक ऐसे विचार का स्मरण कराता है, जो सबको जोड़ता है। यह मार्ग हमें सिखाता है कि त्याग, सहिष्णुता, एकता और मानवता ही सच्चे राष्ट्रनिर्माण की नींव हैं। राम का वनगमन पथ आज एक धार्मिक तीर्थ यात्रा के साथ–साथ राष्ट्रीय एकीकरण का प्रतीक पथ बन सकता है। यदि इस मार्ग को भलीभाँति संरक्षित और प्रचारित किया जाए, तो यह पर्यटन, संस्कृति और अध्यात्म के साथ–साथ भारत के सामाजिक ढांचे को भी और अधिक मजबूत करने में सहायक सिद्ध होगा।

विश्लेषण –

अयोध्या, सरयू नदी के तट पर स्थित प्राचीन नगर, हिन्दू धर्म में सप्तपुरी (सात पवित्र नगरों) में प्रमुख स्थान रखता है। यह सूर्यवंशीय राजा दशरथ की राजधानी थी और भगवान श्रीराम की जन्मभूमि। अयोध्या का उल्लेख वेदों, पुराणों और रामायण में अनेक स्थानों पर आता है। अयो–ध्या का शाब्दिक अर्थ होता है जिसे युद्ध द्वारा जीता न जा सके। वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास के रामचरितमानस दोनों में अयोध्या को आदर्श नगर के रूप में चित्रित किया गया है, जहाँ सुख–शांति, नीति, धर्म और स्नेह का साम्राज्य था। यह नगर न केवल भौगोलिक रूप से समृद्ध था, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत उन्नत था।

वनवास की पृष्ठभूमि :

राजा दशरथ ने जब अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम का राज्याभिषेक तय किया, तो पूरी अयोध्या आनंद में डूब गई। परंतु कैकेयी, राजा दशरथ की प्रिय रानी, ने अपने पूर्व में मिले दो वरों का स्मरण कराया, भरत को राज्य व राम को 14 वर्षों का वनवास, यह सूचना मिलते ही श्रीराम ने किसी प्रकार का विरोध या प्रश्न किए बिना वनगमन का निश्चय कर लिया। उनके इस निर्णय ने अयोध्यावासियों को शोकाकुल कर दिया। राम के साथ

सीता और लक्ष्मण ने भी वनवास को स्वीकार किया, यह पत्नी और भाई के साथ कर्तव्य पालन और परिवारिक एकता का प्रतीक बन गया।

वनगमन की शुरुआत :

वनगमन की यात्रा श्रीराम ने पैदल प्रारंभ की। उनके साथ सीता और लक्ष्मण भी नगर की सीमाओं तक आए। अयोध्यावासी भी उनके पीछे–पीछे चल पड़े, उन्हें रोकने हेतु प्रार्थनाएँ करने लगे। परंतु श्रीराम ने धर्म और मर्यादा के मार्ग को चुना। वनगमन का प्रथम रात्रि–विश्राम तमसा नदी के तट पर हुआ, जो अयोध्या से लगभग 20–25 किलोमीटर दूर है। यहाँ श्रीराम ने अयोध्यावासियों को सुलाकर चुपचाप प्रस्थान किया। तमसा के बाद राम ने श्रृंगवेरपुर की ओर प्रस्थान किया, जहाँ निषादराज गुह से भेंट हुई। यह स्थान प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) के पास स्थित है और गंगा के किनारे बसा हुआ है। अयोध्या से श्रृंगवेरपुर तक का मार्ग आज भी धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा का केंद्र है। यह मार्ग उत्तर प्रदेश सरकार की "राम वनगमन पथ योजना" में शामिल है और यहाँ पर अनेक धार्मिक स्थल, कुंड, मंदिर और रामलीला मंचन स्थल विकसित किए जा रहे हैं।

समकालीन संदर्भ में अयोध्या की भूमिका :

21वीं सदी में अयोध्या पुनः राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में है। 2020 में श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण का शुभारंभ हुआ और जनवरी 2024 में श्रीराम लला का भव्य प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसके साथ ही अयोध्या न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र बन चुकी है, बल्कि आध्यात्मिक पर्यटन, राष्ट्रीय एकीकरण, और संस्कृति के प्रचार का जीवंत केंद्र भी बन रही है।

श्रीराम के वनगमन की दूसरी महत्वपूर्ण पड़ाव श्रृंगवेरपुर है, जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद के समीप गंगा नदी के तट पर स्थित है। यह स्थान भगवान श्रीराम और निषादराज गुह की मित्रता के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। श्रृंगवेरपुर वह स्थान है जहाँ भगवान राम ने पहली बार गंगा पार की और जनजातीय समाज से आत्मीय संवाद स्थापित किया। इस स्थल का वर्णन वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस में अत्यंत भावपूर्ण ढंग से किया गया है, जहाँ निषादराज गुह की भक्ति, सेवा और समर्पण को राम ने सम्मान प्रदान किया। यह घटना भारतीय सामाजिक समरसता, वर्णव्यवस्था की सीमाओं से परे जाकर सच्चे धर्म के पालन का उदाहरण बन गई।

पौराणिक प्रसंग :

राम, सीता और लक्ष्मण तमसा नदी के बाद श्रृंगवेरपुर पहुंचे। यहाँ निषादराज गुह पहले से ही राम के परम भक्त थे। उन्होंने राम की सेवा के लिए गंगा पार उतरने की नौका की व्यवस्था की। लेकिन जब राम ने गंगा पार करने की इच्छा व्यक्त की, तब गुह ने विनम्रता से कहा – प्रभु! हम आपको अपने कंधों पर बैठाकर गंगा पार करवाएंगे, क्योंकि हमारी नौका भी आपकी चरणरज से पवित्र होकर स्वर्ग न चली जाए। यह संवाद उस सामाजिक भावनात्मक एकता का प्रतीक है, जहाँ एक जनजातीय राजा मर्यादा पुरुषोत्तम के सामने स्वयं को सेवक मानकर प्रस्तुत करता है। राम ने गुह के साथ मित्रता स्थापित की, और लक्ष्मण ने रात्रि–भर राम की रक्षा के लिए पहरा भी दिया, जिससे गुह की भावनाएँ और भी प्रगाढ़ हो गईं। यह प्रसंग यह दर्शाता है कि राम न केवल एक राजा थे, बल्कि वे सामाजिक समता के संवाहक भी थे।

श्रृंगवेरपुर का भौगोलिक महत्व :

यह स्थल प्रयागराज से लगभग 40–45 किलोमीटर दूर गंगा के तट पर स्थित है। वर्तमान में श्रृंगवेरपुर का पुराना नाम सोरांव तहसील के अंतर्गत आता है। पुरातात्त्विक दृष्टि से यहाँ कई प्राचीन मंदिरों, अवशेषों और स्तंभों के प्रमाण प्राप्त हुए हैं। श्रृंगवेरपुर गंगा के उस तट पर स्थित है जहाँ से राम ने नाव से पार करके प्रयागराज (त्रिवेणी संगम) की ओर प्रस्थान किया।

सामाजिक समरसता का प्रतीक :

राम और निषादराज की मित्रता भारतीय सामाजिक ताने–बाने में सदियों से समरसता का प्रतीक रही है। यह प्रसंग स्पष्ट करता है कि भगवान राम जाति–पाँति के आधार पर भेदभाव नहीं करते थे। निषादराज जैसे वनवासी राजा को उन्होंने सम्मान और मित्रता का स्थान दिया। यह घटना आदिवासी समाज को सम्मान और गौरव दिलाने वाली घटना बन गई। आज भी निषाद समुदाय इस प्रसंग को आत्मगौरव और सांस्कृतिक पहचान से जोड़कर देखता है।

वर्तमान संदर्भ में श्रृंगवेरपुर :

सरकार द्वारा "राम वनगमन पथ योजना" के अंतर्गत श्रृंगवेरपुर को एक महत्वपूर्ण धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। यहाँ निम्न प्रयास हो रहे हैं, निषादराज मंदिर और घाटों का पुनरुद्धार। राम–गुह संवाद स्थल का स्मारक निर्माण। गंगा तट पर घाट एवं पर्यटन सूचना केंद्र की स्थापना। राम की नाव यात्रा की दृश्यावली को प्रदर्शित करने हेतु धार्मिक डिजिटल म्यूजियम की योजना।

पर्यटन और सांस्कृतिक महत्व :

श्रृंगवेरपुर का समावेश राम वनगमन पर्यटन मार्ग में एक विशिष्ट पड़ाव के रूप में किया गया है। यह स्थल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देता है। स्थानीय अर्थव्यवस्था और कारीगरों को रोजगार प्रदान करता है। सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के प्रतीक स्थलों में शामिल है।

प्रयागराज, जिसे पहले इलाहाबाद कहा जाता था, त्रिवेणी संगम, गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम स्थल पर स्थित एक प्राचीन नगर है। इसे 'तीर्थराज' भी कहा जाता है। भगवान श्रीराम ने श्रृंगवेरपुर से गंगा पार कर यहीं प्रवेश किया और महर्षि भारद्वाज के आश्रम में विश्राम किया। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, श्रीराम ने महर्षि भारद्वाज से वन में जाने की दिशा, मार्ग और वहाँ की परिस्थितियों के विषय में मार्गदर्शन प्राप्त किया। महर्षि ने उन्हें चित्रकूट जाने की सलाह दी और वहाँ के ऋषि–अश्रमों की जानकारी दी। महर्षि भारद्वाज का आश्रम शिक्षा, तपस्या और नीति का केंद्र था। यहां राम का ठहरना यह संकेत देता है कि वे वनवास की शुरुआत न केवल शारीरिक रूप से कर रहे थे, बल्कि मानसिक रूप से भी स्वयं को तप के लिए तैयार कर रहे थे।

भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व :

प्रयागराज उत्तर प्रदेश के केंद्र में स्थित है और भारत के सबसे बड़े धार्मिक समागम, कुंभ मेले, का प्रमुख स्थल है। यह स्थान प्राचीनकाल से ज्ञान, भक्ति और साधना का केंद्र रहा है। संगम पर स्नान और साधना का विशेष महत्व है, यही कारण है कि राम ने वनगमन के समय यहाँ ठहराव किया।

चित्रकूट, धर्म, दर्शन और भाईचारे की भूमि :

महर्षि भारद्वाज से विदा लेकर श्रीराम, सीता और लक्ष्मण ने चित्रकूट की ओर प्रस्थान किया। चित्रकूट वह पावन भूमि है जहाँ श्रीराम ने वनवास के प्रारंभिक दिन बिताए। यही वह स्थल है जहाँ भरत मिलाप हुआ जो भाईचारे और प्रेम का अद्वितीय प्रतीक माना जाता है। जब भरत को यह ज्ञात हुआ कि उनकी माता कैकेयी के कारण राम वनवास को चले गए हैं, तो उन्होंने समस्त अयोध्यावासियों और गुरुओं के साथ राम को मनाने के लिए चित्रकूट का रुख किया। यहाँ पर भरत और राम का हृदयविदारक मिलन हुआ। भरत ने राम से अयोध्या लौटने की प्रार्थना की, लेकिन राम ने पिता की आज्ञा के पालन को सर्वोपरि माना। फिर भरत ने राम की खड़ाऊं को राजगद्दी पर स्थापित करने की शपथ ली और स्वयं नंदीग्राम में रहकर राजकार्य को राम के नाम पर चलाया। यह घटना आज भी कर्तव्य, प्रेम और निस्वार्थ सेवा का अनुपम उदाहरण है।

चित्रकूट का भौगोलिक सौंदर्य :

चित्रकूट विंध्याचल पर्वतमाला के बीच स्थित है और उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश की सीमा पर फैला हुआ है। मंदाकिनी नदी, कामदगिरि पर्वत, हनुमान धारा, भरत मिलाप मंदिर आदि यहाँ के प्रमुख धार्मिक स्थल हैं। यह स्थान तप, सेवा और धर्म के सिद्धांतों का केंद्र रहा है। कई ऋषियों का निवास यहीं था।

चित्रकूट, राम वनगमन पथ का सांस्कृतिक केंद्र :

चित्रकूट न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि यह भारतीय समाज के मूल जीवन–मूल्यों का शाश्वत संदेशवाहक है, त्याग और सेवा की भावना (भरत का त्याग), धर्म पालन और मर्यादा (राम का वन में रहना), नारी–शक्ति का आदर्श (सीता की सहवासन), सामाजिक समता और ऋषि–मुनियों से संवाद। यह स्थान भारतीय दर्शन, राजनीति (राजधर्म बनाम पितृधर्म), और आध्यात्मिक चेतना का ऐसा संगम है जो आज भी नैतिकता, आदर्शवाद और एकात्मता की प्रेरणा देता है।

वर्तमान में प्रयागराज और चित्रकूट का महत्व :

कुंभ और माघ मेले की वैश्विक प्रसिद्धि। आधुनिक धर्मशालाएं, घाटों का पुनरुद्धार। एयरपोर्ट, रेलवे, जलमार्ग और संगम विकास परियोजनाएं। राम वनगमन पथ योजना का प्रमुख केंद्र। राम दर्शन संग्रहालय, रामायण थीम पार्क, तीर्थ सर्किट आदि योजनाएँ। चित्रकूट विश्वविद्यालय और आध्यात्मिक अध्ययन केंद्रों का विकास।

दंडकारण्य, पौराणिक और भौगोलिक पहचान :

दंडकारण्य एक विस्तृत वनक्षेत्र था, जो प्राचीन भारत में दक्षिण की ओर फैला हुआ था। यह क्षेत्र वर्तमान में छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, ओडिशा, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के कुछ भागों में फैला हुआ माना जाता है। रामायण में यह क्षेत्र राक्षसों का गढ़ और तपस्वियों का तप स्थल दोनों था। श्रीराम, सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास का अधिकांश समय यहीं व्यतीत किया। यह वन अनेक ऋषियों, मुनियों और आश्रमों का क्षेत्र था, जिन्हें राक्षसों द्वारा सताया जाता था। राम ने यहाँ धर्म की स्थापना के लिए राक्षसों का विनाश किया और साधु–संतों की रक्षा की। श्रीराम ने दंडकारण्य में केवल एक तपस्वी के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील योद्धा के रूप में प्रवेश किया। उन्होंने देखा कि राक्षस जैसे खर, दूषण, त्रिशिरा आदि तपस्वियों के यज्ञों में विघ्न डालते हैं और उन्हें अत्याचार से पीड़ित करते हैं। वाल्मीकि रामायण के अरण्य कांड में वर्णन मिलता है कि कई ऋषियों ने राम से रक्षा की गुहार लगाई। राम ने यह उत्तर दिया। ऋषियों की रक्षा करना मेरा धर्म है, और राक्षसी प्रवृत्तियों का नाश ही मेरा कर्तव्य है। यहां से श्रीराम का धर्म–युद्ध प्रारंभ होता है।

पंचवटी की ओर यात्रा :

दंडकारण्य क्षेत्र के भीतर एक विशेष स्थान पंचवटी है, जो आज के नासिक (महाराष्ट्र) के समीप गोदावरी नदी के तट पर स्थित है। राम ने यहीं पर सुंदर कुटिया बनाकर कुछ समय तक निवास किया। यहाँ लक्ष्मण ने सीता के लिए एक सुंदर उपवन और कुटी बनाई। यहीं शूर्पणखा राम से विवाह का प्रस्ताव लेकर आई, जिसे राम और लक्ष्मण ने अस्वीकार कर दिया। इसके बाद शूर्पणखा के भाई खर–दूषण ने राम से युद्ध किया और मारा गया। इसी स्थान से सीता हरण की कथा आरंभ होती है, जब रावण ने मारीच के माध्यम से राम और लक्ष्मण को दूर भेजकर सीता का अपहरण किया। इसलिए पंचवटी न केवल वनवास का स्थल था, बल्कि रामायण की निर्णायक संघर्ष गाथा का प्रारंभ बिंदु भी है।

सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ :

दंडकारण्य में राम का संघर्ष यह दर्शाता है कि, धर्म केवल ध्यान या व्रत नहीं है, बल्कि अधर्म से संघर्ष और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध भी धर्म का अंग है। राम ने यहाँ वनवासी समाज से गहरा संबंध स्थापित किया,

जैसे शबरी के प्रेम से राम का हृदय पिघला और उन्होंने उसके झूठे बेर खाए। यहाँ नारी सम्मान, तपस्वी सेवा और जनजातीय स्नेह जैसे मूल्यों को सर्वोपरि स्थान मिला।

भौगोलिक प्रसार और ऐतिहासिक धरोहर :

वर्तमान समय में दंडकारण्य के अंतर्गत आने वाले प्रमुख स्थल, शबरी धाम (डांग, गुजरात और छत्तीसगढ़ सीमा) रामटेक, नागपुर (महाराष्ट्र), गंधमादन पर्वत और बस्तर क्षेत्र (छत्तीसगढ़), यह क्षेत्र वन्य जीवन, झरनों, गुफाओं, और पर्वतों से आच्छादित है, जो रामायण के प्रसंगों को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है। वर्तमान भारत सरकार और संबंधित राज्य सरकारें मिलकर इस क्षेत्र को 'राम वनगमन पर्यटन परिपथ' के रूप में विकसित कर रही हैं। योजनाओं में शामिल हैं, प्राकृतिक ट्रेकिंग मार्गों का विकास। राम वन कुटियों का पुनर्निर्माण और पर्यटन मार्गदर्शन केंद्र। जनजातीय जीवन और रामकथा के मिलन पर आधारित सांस्कृतिक संग्रहालय। रामायण आधारित थियेटर और लाइट एंड साउंड शो।

पंचवटी – संघर्ष की शुरुआत और स्त्री मर्यादा की रक्षा :

पंचवटी, गोदावरी नदी के तट पर स्थित वह स्थान है जहाँ श्रीराम, सीता और लक्ष्मण ने वनवास का एक महत्वपूर्ण काल बिताया। यह स्थल आज नासिक (महाराष्ट्र) के निकट है और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस स्थान को पंचवटी इसलिए कहा गया क्योंकि यहाँ पाँच पवित्र वृक्षों – पीपल, बरगद, आम, जामुन और बेल की उपस्थिति थी। रावण की बहन शूर्पणखा ने राम को विवाह का प्रस्ताव दिया, जिसे राम और लक्ष्मण ने विनम्रता से ठुकरा दिया। क्रोधित होकर वह सीता को नुकसान पहुँचाना चाहती थी, तब लक्ष्मण ने उसकी नाक काट दी। खर–दूषण वध, इस अपमान का बदला लेने आए खर–दूषण और अन्य राक्षसों का राम ने वध किया। रावण ने मारीच को स्वर्ण मृग बनाकर भेजा। सीता की इच्छा पर राम उसका पीछा करते गए। लक्ष्मण भी सीता की चिंता में राम के पीछे गए और इस दौरान रावण ने सीता का अपहरण कर लिया। इस प्रसंग से स्पष्ट होता है कि स्त्री की सुरक्षा, संयम और नारी सम्मान की अवधारणा राम के लिए कितनी महत्वपूर्ण थी।

रावण द्वारा सीता हरण के पश्चात जब वह आकाश मार्ग से लंका की ओर जा रहा था, तब पक्षिराज जटायु ने उसे रोकने का प्रयास किया। उसने रावण से युद्ध किया, परंतु वृद्ध होने के कारण घायल होकर पृथ्वी पर गिरा। राम जब सीता को खोजते हुए वहाँ पहुँचे, तब जटायु ने अपनी अंतिम साँसों में रावण के दक्षिण दिशा की ओर जाने की जानकारी दी। राम ने जटायु को गले लगाया और उसकी वीरता व धर्म के प्रति निष्ठा को नमन करते हुए अपने हाथों से उसका अंतिम संस्कार किया। यह प्रसंग यह दर्शाता है कि राम का करुणामय हृदय केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं था, वह पशु–पक्षियों को भी धर्मात्मा समझते थे। पंचवटी के समीप ही श्रीराम शबरी के आश्रम पहुँचे। शबरी एक भीलनी थी, जो अपने गुरु मतंग ऋषि के आदेशानुसार वर्षों से राम की प्रतीक्षा कर रही थी। उसने राम के लिए झूठे बेर चखे हुए प्रेमपूर्वक अर्पित किए। राम ने प्रसन्न होकर उन्हें स्वीकार किया और शबरी से मार्ग पूछा, तब शबरी ने उन्हें किष्किंधा की ओर जाने का संकेत दिया जहाँ सुग्रीव और हनुमान से मिलना संभावित था। यह घटना भक्ति में वर्ण और जाति के भेदभाव को समाप्त कर देती है। शबरी राम की लीला में निरपेक्ष प्रेम और सेवा का उदाहरण बन गई।

राम, शबरी के मार्गदर्शन में किष्किंधा पहुँचे, जो वर्तमान में कर्नाटक राज्य के हम्पी क्षेत्र में स्थित है। यही वह स्थल है जहाँ राम का हनुमान और सुग्रीव से मिलन हुआ। हनुमान ने वानर रूप में राम से भेंट की और पहले संवाद में ही राम के शिष्य बन गए। राम ने सुग्रीव से मित्रता की। सुग्रीव का भाई बालि अत्याचारी था जिसने सुग्रीव को राज्य से निकाल दिया था। राम ने बालि का वध कर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाया। सुग्रीव ने सीता की खोज हेतु वानरों की सेना का गठन किया और हनुमान को दक्षिण दिशा में भेजा। यह अध्याय राम के राजनीतिक कौशल, न्यायप्रियता, और संगठन क्षमता का द्योतक है। राम केवल धार्मिक नायक नहीं थे, वे रणनीतिक नेतृत्वकर्ता भी थे। हनुमान रामकथा में शक्ति और भक्ति का समन्वय हैं। राम से मिलने के बाद उन्होंने आजीवन सेवा का व्रत लिया और सीता की खोज के लिए लंका की ओर प्रस्थान किया।

राम और हनुमान का संबंध मित्रता, गुरु–शिष्यता और दास्य भक्ति का ऐसा उदाहरण है, जो आज भी वफादारी, सेवा और निष्ठा का प्रतीक बना हुआ है।

निष्कर्ष –

श्रृंगवेरपुर, केवल राम का एक पड़ाव नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की उस चेतना का प्रतीक है जिसमें धर्म, भक्ति, और सामाजिक समता का अपूर्व समन्वय दिखाई देता है। यह स्थल आज भी राम और निषादराज की मूल्यपरक मित्रता की स्मृति को जीवंत रखे हुए है, जो समकालीन भारत के लिए एक आदर्श सामाजिक संदेश प्रस्तुत करता है। प्रयागराज और चित्रकूट राम वनगमन पथ के केवल भौगोलिक पड़ाव नहीं, बल्कि भारत के नैतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदर्शों के ध्रुव केंद्र हैं। ये स्थल हमें सिखाते हैं कि धर्म केवल पूजा नहीं, बल्कि कर्तव्यपालन, प्रेम, सेवा और आत्मत्याग का जीवन है। राम और भरत के संवादों में आज भी वह शक्ति है, जो समकालीन समाज को संवेदनशीलता, नैतिकता और राष्ट्र प्रेम का पाठ पढ़ा सकती है। दंडकारण्य श्रीराम के वनवास का वह कालखंड है, जहाँ उन्होंने केवल यात्री नहीं बल्कि धर्मसंस्थापक और न्यायप्रिय योद्धा के रूप में स्वयं को स्थापित किया। यह क्षेत्र सामाजिक समरसता, ऋषि–परंपरा की रक्षा, और राक्षसी शक्तियों के विनाश का प्रतीक है। आज जब हम इस मार्ग को पुनः पर्यटन और एकता के दृष्टिकोण से देख रहे हैं, तब यह स्थान भारत के बहु–स्तरीय सांस्कृतिक धरोहर को जोड़ने वाला एक प्रमुख कड़ी बनता है। पंचवटी से किष्किंधा तक की यात्रा राम के वनवास की एक अत्यंत निर्णायक और रूपांतरणकारी यात्रा है। इस खंड में श्रीराम ने पत्नी के अपहरण का दुःख सहा, मित्रता और संगठन का निर्माण किया, और सेवा तथा भक्ति के अद्भुत प्रतीक हनुमान जैसे सहयोगी पाए। यह यात्रा हमें नारी सम्मान, सेवा–भाव, रणनीति, धर्म रक्षा और सामाजिक समरसता के मूल्यों से जोड़ती है। आधुनिक भारत में यह पथ न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का स्रोत भी बन रहा है।

संदर्भ –

1. Dr. Sumant Singh - Eco-Tourism in Madhya Pradesh Project Report (U.G.C.), year 2005-06
2. A.K. Raina, S.K. Agrawal - Tourism Development Dynamics, Philosophy and Strategies, year 2001
3. एस.डी. कौशिक, अरुणेश कुमार, – भौगोलिक विचारधाराएं एवं विधि तंत्र, रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोड, मेरठ, संस्करण 2003
4. बी.एस. चौहान – भारत का भूगोल, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ, संस्करण 2002
5. एस.एम. अली – जाग्रफी आफ पुराणाज, संस्करण 1990
6. डॉ. सुमन्त सिंह – म.प्र. पारिस्थितिकी पर्यटन, शोध परियोजना कार्य, संस्करण 2006
7. डॉ. जगमोहन नेगी – पर्यटन मार्केटिंग में विकास, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2006
8. डॉ. जगमोहन नेगी – पर्यटन यात्रा के सिद्धान्त, संस्करण 2006
9. ए.के. भाटिया – टूरिज्म डेवलपमेन्ट आफ प्रिंसिपुल एण्ड प्रैक्टिस, 2001
10. डॉ. जगमोहन नेगी – विश्व के साहित्यिक पर्यटन और खेल, तक्षशिला प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 2005
11. डॉ. एस.पी. काला – गढ़वाल हिमालय में तीर्थ यात्रा एवं नया पर्यटन, संस्करण 2006
12. गोस्वामी तुलसीदास – रामचरित मानस, गोविन्द भवन, कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं मुद्रित।
13. गोस्वामी तुलसीदास – बरवै रामायण, गोविन्द भवन, कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं मुद्रित।
14. सं. हनुमान प्रसाद पोद्दार – विष्णु पुराण, गोविन्द भवन, कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं मुद्रित।
15. श्री वेद व्यास जी –ऐतरेय ब्राह्मण, गोविन्द भवन, कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं मुद्रित।
16. श्री वेद व्यास जी – शतपथ ब्राह्मण, गोविन्द भवन, कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं मुद्रित।

17. श्री वेद व्यास जी – अथर्ववेद, गोविन्द भवन, कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं मुद्रित।
18. श्री वेद व्यास जी – यजुर्वेद, गोविन्द भवन, कार्यालय, गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित एवं मुद्रित।